Notes

(3) धार्मिक विविधता :— भारतीय समाज धर्म से अनुप्राणित समाज है और धर्मों के मतावलम्बी यहाँ रहते हैं। हिन्दु मुस्लिम, सिख ईसाई बौद्ध एवं जैन धर्म के मतावलम्बी यहाँ रहते हैं और इस धर्म को मानने वाले 2011 के जनगणना के अनुसार

हिंदु	—	79.8 %	— 96.63 करोड़
मुस्लिम	—	14.2%	— 17.22 "
ईसाई	—	2.3%	— 2.78 "
सिख	—	1.7%	— 2.08 "
बौद्ध	—	0.7%	— 0.84 "
जैन	—	0.7%	— 0.45 "

उपर्युक्त धर्मों में अनेक पंथ तथा सम्प्रदाय है जिस कारण से ये अन्य धर्मों में ही नहीं अपने धर्म के लोगों के विचारधारा एवं पंथ के आधार पर भेदभाव करते हैं। प्रत्येक पंथ की अपनी उपासना पद्धति, सृष्टि की प्रक्रिया इत्यादि मान्यताएँ अलग-अलग है। उदाहरण के लिए - हिन्दु धर्म जिसे सनातन धर्म कहा जाता है यह धर्म

Scanned by CamScanner

Notes

Date

जिसे सनातन धर्म कहा जाता है यह धर्म बहुदेववादी है तो कहीं एकेश्वरवादी। हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवताओं धार्मिक उत्सवों, दान, व्रत, उपवास, तीर्थयात्राएँ और मूर्ति-पूजन का प्रचलन है। हिन्दु धर्म में मठ और पंथ हैं जो इस धर्म को और भी जटिल बना देते हैं। जैसे - कबीरपंथी सतनामी लिंगायत। भारतवर्ष में हिन्दू धर्म के अनुयायी सर्वाधिक हैं परन्तु इसकी संख्या में कमी होती जा रही है।

मुस्लिम धर्म के अनुयायी भारत में हिन्दुओं के पश्चात् हैं। ये शिया और सुन्नी दो भागों में विभक्त है। भारतीय सुन्नी हनीफी सम्प्रदाय तथा दक्षिण में विशेष रूप से मापिला और लक्षद्वीप टापू में शाफी सम्प्रदाय को माना जाता है।

सिख सम्प्रदाय में सिखों के दसवें गुरु श्री गोबिन्दसिंह जी महाराज ने हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु इस पंथ का निर्माण किया गया है। सिखों में पाँच प्रकार प्रचलित है जैसे - कंघा, केश, कच्छा, कृपाण तथा कड़ा। गुरुनानकदेव को इसका संस्थापक माना जाता है। सिख धर्म एकेश्वरवादी धर्म है, जिसमें एक ही ईश्वर को परम सता माना गया है।

Scanned by CamScanner

Notes

इस धर्म में गुरु के प्रति विशेष आस्था रखता है। इसके अनुसार मुक्ति का अर्थ मनुष्य का ईश्वर से साक्षात्कार है। गुरुग्रन्थसाहिब में मुक्तिमार्ग का वर्णन गुरुनानक देव द्वारा किया गया है तथा इसे पाँच खण्डो - धर्म खण्ड, ज्ञान खण्ड शरण खण्ड, कर्म खण्ड तथा सुच खण्ड का वर्णन है।

ईसाई रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट दो भागों में विभक्त है।

हिन्दू धर्म में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए बौद्ध धर्म आया और तत्कालीन समाज ने बुद्ध की शिक्षाओं तथा धर्म को हाथों - हाथ लिया परंतु बाद में हिन्दू धर्म में सुधार आया और बुद्ध को भगवान विष्णु का अवतार माना जाने लगा, जिसके परिणाम-स्वरूप इस धर्म की ओर लोगों की आस्था में कमी आई। बौद्ध धर्म आत्मा की सत्ता न मानते हुए अनात्मवादी तथा क्षणिकवादी है जिनके अनुसार प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है।

जैन धर्म 'जिनो' (राग-द्वेष आदि पर विजय प्राप्त करनेवाला)

Scanned by CamScanner

Notes Date

द्वारा प्रणीत धर्म है। जैन तीर्थ करने का साक्ष्य तथा नाम वेदों में भी प्राप्त होता है। जैन धर्म दिगम्बर और श्वेताम्बर दो भागों में विभक्त है। दिगम्बर निवस्त्र रहते हैं तथा श्वेताम्बर श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। यह धर्म यथार्थवादी सापेक्षवादी तथा अनेकांतवादी, आत्मवादी है

जातीय विविधता :—

भारतीय समाज में जाति का बहुत अधिक महत्व है। वैदिककाल में वर्ण व्यवस्था जन्मजात न होकर कर्म से जोड़ा जाता है। वर्तमान में जाति व्यवस्था का आधार जन्म है। शहरों में जाति के स्थान पर वर्गों का उदय हो रहा है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में जातिप्रथा काफी पैर पसार चुकी है। भले ही संविधान ने सबको समानता और छुआ-छूत तथा भेदभावपूर्ण व्यवहार को निषिद्ध कर दिया है। राजनीति की वेदी पर जाति की छवि देकर नेतागण और पार्टियाँ छोटे-बड़े चुनावों में अपने स्वार्थ को सिद्ध करते हैं।

Notes

Date | | | |

जिससे जाति का रावण दिन-प्रतिदिन और भी विकराल होते जा रहा है। जाति के आधार पर इतनी विखण्डता उत्पन्न कर दी गई है कि कभी-कभी राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता भी बाधित हो जाती है। कई प्रदेशों में जातिवाद के नाम पर राजनैतिक दाँव-पेंच खेला जाता है।

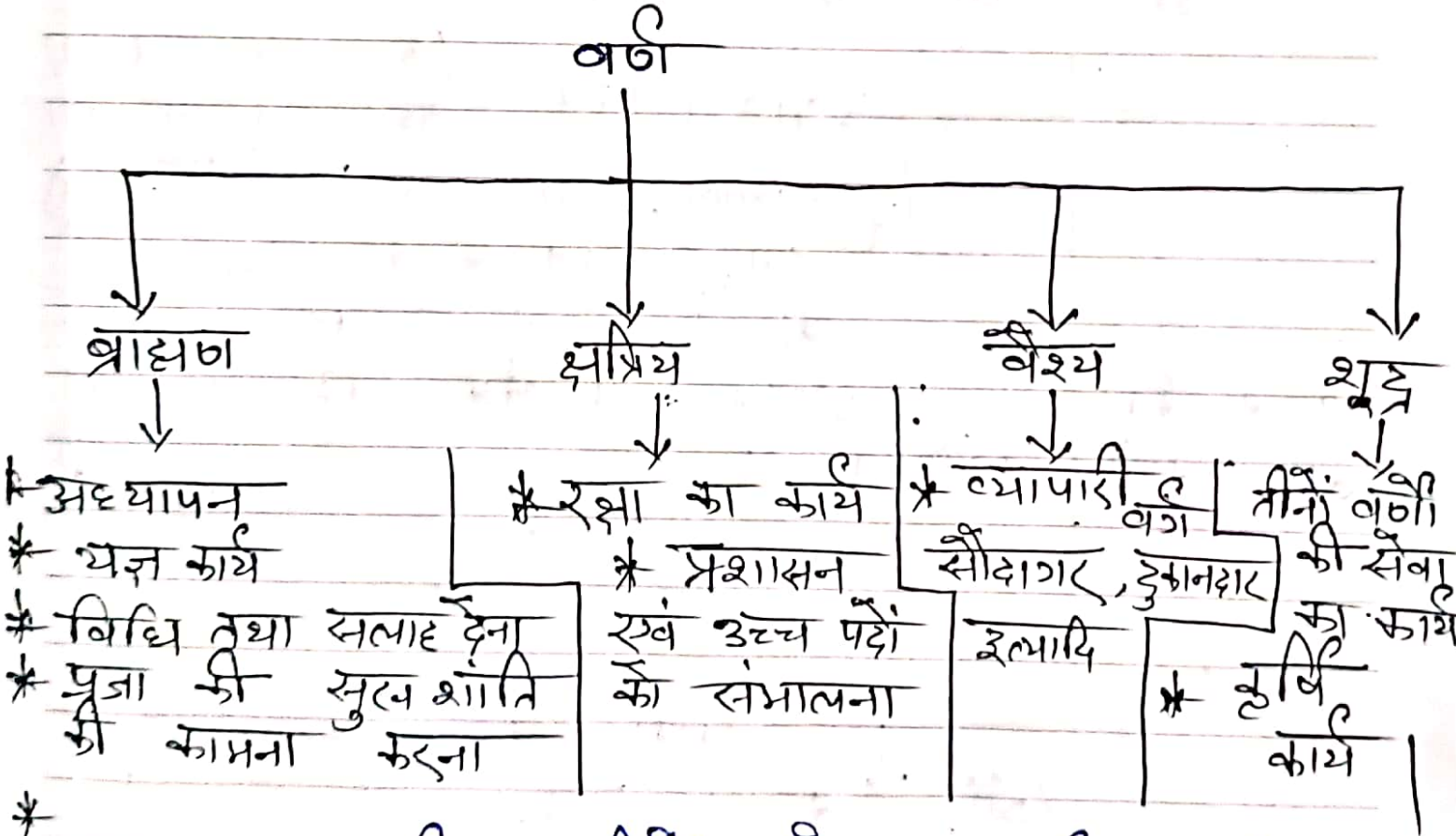

इन सभी जातियों के अन्तर्गत भी तमाम विविधताएँ विद्यमान हैं।

Scanned by CamScanner

Notes

(5) जनजातिय विविधता ! —

जनजातियों से तात्पर्य ऐसी जातियों से है जो आज भी सभ्यता की दौड़ में पीछे हैं तथा आदिम जीवन व्यतीत कर रही है। व. 2011 के जनगणना के अनुसार करोड़ों जनजातियों भारत में निवास करती है। संपूर्ण भारत को जनजातियों की दृष्टि से चार क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है

भारत की जनजातियों 2011 के जनगणना के अनुसार —

- मध्य क्षेत्र — (मध्यप्रदेश, बिहार तथा उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल)
  - (संथाल, मुंडा, उरॉव, तने, भूमीज, कोया, खोण्ड मुइयाँ, बैगा आदि)
- उत्तर पूर्वी क्षेत्र — (हिमालय की तराई, असम तथा बंगाल)
  - (गोद्दी, गुज्जर, थारु कुकी, गारो, खासी तथा नागा आदि)
- दक्षिण क्षेत्र — (केरल, मैसूर मद्रास)
  - (गौंड़, कोण्डा, डोरा, इरुला, टोडा, पनीयान आदि)
- पश्चिमी क्षेत्र — (राजस्थान गुजरात, महाराष्ट्र)
  - (गौंड, मुण्डा, भील तथा संथाल)

Scanned by CamScanner

Notes Date

(6) **जैविक विविधता !—**

जैविक आधार पर प्राणियों एवं जीव-जन्तुओं में विविधता पाई जाती है जिसे जैव विविधता के नाम से जाना जाता है। जैविक विविधता में प्राणी तथा जीव-जन्तु अपने अस्तित्व के लिए परस्पर निर्भर रहते हैं।

(7) **भौगोलिक विविधता !—**

सम्पूर्ण विश्व भौगोलिक रूप से पृथक है। भारत में ही देखा जाए तो कहीं गंगा का उपजाऊ मैदान है तो कहीं थार का मरुस्थल कहीं कश्मीर की बर्फीली वादियाँ हैं तो कहीं पिघलाने वाली गर्मी है। भौगोलिक विविधता की दृष्टि से भारत अत्यधिक विविधतापूर्ण है।

(8) **जलवायु विविधता !—**

जलवायु की दृष्टि से भी भारत विविधतापूर्ण है। यहाँ सर्दी, गर्मी एवं बरसात प्रत्येक प्रदेश में अलग-अलग तरह से अनुभव किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner